सूर्यमुखी

उन्नत प्रभेद : संकुल (कम्पोजिट)—मोरडेन, सूर्या, सी.ओ.—1 ,पैराडेविक, डी.आर.एस.एफ. (ओ. पी.)

संकर प्रभेद— बी.एस.एच.—1 , के.बी.एस.एच.—1, एम.एस.ए.एच.—1,8 और 17 ,के.बी.एस.एच. 44

मृदा का चुनाव : सभी प्रकार की मृदाओं में सूर्यमुखी की खेती की जा सकती है। लेकिन हल्की दोमट मृदा इसकी खेती हेतु उपयुक्त है। इसकी खेती हमारे राज्य में रबी, बसंत एवं जायद मौसम में की जा सकती है।

खेत की तैयारी : खेत की तैयारी हेतु दो—तीन बार जुताई करके पाटा चला दें और खेत समतल कर दें।

बीज दर : संकुल — 08 कि.ग्रा./हे.। संकर — 05 कि.ग्रा./हे.।

बीजोपचार : सूर्यमुखी के बीज को 16 घंटे तक पानी में भिगोने के बाद 5—6 घंटे छाया में सूखायें तथा बीज जनित रोगों से बचाने के लिये फफूंदनाशक से बीज को उपचारित करें। बुआई से पहले बीजों को वैविस्टीन चूर्ण से 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए।

बुआई का समय : रबी में — 15 अक्टूबर से 10 नवम्बर, बसंत में 15 फरवरी से 10 मार्च एवं जायद में — अप्रैल माह।

बुआई की दूरी : संकुल प्रभेद की पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45 सें.मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 20 सें.मी. एवं संकर प्रभेद की पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 सें.मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 30 सें.मी. रखनी चाहिए।

बीज बोने की गहराई : 4—6 सें.मी.।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन : 5 टन कम्पोस्ट खाद को बुआई से 20—30 दिन पूर्व खेत में डालकर अच्छी तरह मिला दें। संकुल प्रभेद में 60 : 80 : 40 किलोग्राम एनपी के./हे. एवं संकर—80: 90: 40 किलोग्राम एन.पी.के. /हे. प्रयोग करना चाहिए।

प्रयोग विधि : सिचित अवस्था में नत्रजन की आधी मात्रा एवं स्फुर तथा पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय प्रयोग करें। नत्रजन की शेष आधी मात्रा को दो बराबर भागों में बाँटकर पहली सिंचाई के बाद एवं फूल लगने के समय उपरिवेशित करें। स्फुर की पूर्ति सल्फर युक्त उर्वरक से करें। असिचित अवस्था में नत्रजन, स्फुर तथा पोटाश की पूरी मात्रा को बुआई के समय प्रयोग करें।

सिंचाई : अच्छी उपज प्राप्त करने के लिये मृदा में पर्याप्त नमी बनाये रखना आवश्यक है। रबी एवं जायद फसल के लिये क्रांतिक अवस्था यथा, कली बनना (20—25 दिन बाद), पुष्प बनना

(55–60 दिन बाद) एवं बीज बनना (70–75 दिन बाद) के समय अर्थात तीन सिंचाई करनी चाहिए।

निकाई–गुड़ाई एवं खरपतवार प्रबंधन : सूर्यमुखी में 15 दिनों के अंदर अतिरिक्त पौधों की छटनी जरूर करें। बुआई के 20–25 दिन बाद एवं 35–40 दिनों बाद दो निकाई–गुड़ाई कर देनी चाहिए। फसल को 60 दिनों तक खरपतवार रहित रखना चाहिए। रासायनिक विधि से खरपतवार नियंत्रण हेतु पेन्डीमिथालिन 30 ई.सी. का 3.0 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 700–800 लीटर पानी में घोलकर बुआई के 1–2 दिनों के अंदर बीजों के अंकुरण के पूर्व छिड़काव करना चाहिए।

कटाई, दौनी एवं भंडारण : जब फूल का पिछला भाग पीला पड़ जाय तो कटाई करनी चाहिए। बीजों को अच्छी तरह सुखाकर रखना चाहिए तथा भंडारण करते समय नमी की मात्रा 10–12 प्रतिशत से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।